क्या है संस्कार-मान्यताओं का रहस्य?

रंगोली सजाएं लक्ष्मी-नारायण बुलाएं

प्रायः उत्सवों, त्यौंहारों के समय किसी के घर के बाहर विभिन्न रंगो से बनी डिजाईन देखकर आप विचार में पड़ गये होंगे कि यह क्यों बनाई गई है? त्यौहारों के समय में और विशेषकर दीपावली के समय में घर को लीपने-पोतने का, सजाने-संवारने का कार्य किया जाता है। आधुनिक समय में दीवारो को सजाने का कार्य पेंटिग्स, पोर्टेट ने ले लिया है, वहीं घर के बाहर बनी-बनाई रंगोली के स्टीकर भी मिलने लगे है। कई स्थानों पर तो रंगोली बनाने के लिये विभिन्न डिजाईन के साधन भी मिलने लगे जिसमें चावल का आटा भर कर जमीन पर चलाना मात्र होता है और सुन्दर आकृतियाँ उभर आती है। यह एक प्रकार से स्त्रियों द्वारा अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर भी होता है। ग्रामीण परिवेश अभी भी आधुनिकता से अछूता है। वहाँ घर के बाहर की दीवारों पर, आंगन में, मुख्य द्वार के बाहर विभिन्न रंगों की अद्भुत रंगोली देखने को मिल जायेगी।

भारतीय संस्कृति शुरु से ही सुन्दरता की उपासक रही है। जिस प्रकार नारी सौन्दर्य की प्रतीक मानी गई है, उसी प्रकार वह घर-आंगन को शुभ अवसरों पर सजाती और संवारती भी है। नारी अपना पूरा सौन्दर्य घर-आंगन को सजाने में उड़ेल देती है। वर्षों से नारी अपने घरों को सजाती आई है।

हमारे भारतवर्ष में विभिन्न प्रांतों में रंगोली सजाने की अलग-अलग प्रथाएं हैं। शहर में रंगोली और गांव की भाषा में इसे मांडना या अल्पना भी कहा जाता है। गांव में घर की दीवारें, दरवाजे, खिड़कियां चित्रकारी से सजे रहते हैं। इन्हें मांडनों के आकार में चित्रित किया जाता है। गेरू, हिमिच पांडु रंग से विशेष प्रकार की खपच्चियों से इसे घर के आंगन दीवारों पर मांडा जाता है। छोटे-छोटे कपड़ों की सहायता से उंगलियों से छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा कोण, षटकोण, गोलाकार, चर्तुभुजाकार एवं अन्य आकारों में मांडने तैयार किए जाते हैं। ये रंग गांवों में अधिक महंगे भी नहीं पड़ते हैं। शहरों में गांव की अपेक्षा रंगोली रंगों के माध्यम से तैयार की जाती है। आंगन, फर्श पर लीपकर इस पर बिंदी सबसे पहले बनाई जाती है जो कि रंगोली का ग्राफ होता है। तत्पश्चात् विभिन्न आकृतियों में रंगोली बनाई जाती है। इसे सफेद रंग से सबसे पहले आकार देकर उसमें मैच करता हुआ कलर भरा जाता है जैसे त्यौंहार वैसी ही रंगोली सजाई जाती है। जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण से संबंधित रंगोली, गणेश चतुर्थी पर गणेश जी से संबंधित एवं दीपावली पर लक्ष्मीजी एवं अन्य आकर्षक फूल, पत्तियां, बेलबूटे वाली रंगोली बनाई जाती है। चित्रकला में दक्ष महिलाएं इसे बड़ी चतुराई और सौन्दर्यता से बनाती हैं।

प्रतीकोपासना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। यही कारण है कि प्राचीन काल से अब तक इष्ट-प्राप्ति और अनिष्ट-परिहार के लिए विविध प्रतीको के पूजने की प्रथा प्रचलित है। आज के पाश्चात्य प्रभाव की पर्याप्त पैठ शहरों में होने के कारण हमारे लोक-संस्कृति के प्रतीक शहरी क्षेत्र की अपेक्षा गाँवों में अधिक लोकप्रिय है; जिन्हें हम अल्पना, चौक पूरना, रंगोली, मांडणे (मांडना), कोलम, सथिया आदि नामों से पुकारते हैं। इन प्रतीकों में असीम आस्था, श्रद्धा तथा कल्याण की कामना समाई हुई है। तभी तो पर्व-त्यौंहारों, सांस्कृतिक समारोहो, मांगलिक कार्यों इत्यादि पर उक्त प्रतीक बनाए जाने की लोक-परंपरा और प्रचलन है।

अल्पना-अलंकरण अत्यधिक पुराना प्रतीत होता है; क्योंकि पुरातत्वीय खोजो से जो सामग्री प्राप्त हुई है, उसमें अद्भुत रेखांकन देखने को मिले हैं। विशेषज्ञों का इस विषय में मत है कि ये रेखांकन, जो प्राय; अल्पना में पाए जाते हैं, वे शिव के प्रतीक हैं तथा अर्धवृत का प्रयोग आदि शक्ति के प्रतीक है। इस प्रकार शिव शक्ति के प्रतीक रूप में अल्पना का अंकन हमारे देश के एक छोर से दूसरे छोर तक मांगलिक अवसरो पर अवश्य किया जाता है; जिसे विविध क्षेत्रो में अल्पना, रंगोली, चौक पूरना, मांडना, कोलम, कोडरा, कुंडल आदि नामो से पुकारा जाता है।

भारत के सभी प्रांतों में रंगोली बनाने की प्रथा है, दशहरा, दीपावली, शादी-ब्याह एवं स्वागत के अवसरों पर भव्य सुन्दर व आकर्षक कलात्मक रंगोली तैयार की जाती है। अधिकांश व्यक्तियों को यह भ्रम होता है कि रंगोली ही अल्पना का पर्यायवाची है। एक स्थान को भली-भांति प्रकार से धो-पोंछकर साफ कर लेते हैं और उसके बाद चाक से मन पसन्द की कोई भी आकृति बना लें। बाद में इस आकृति को चावल के आटे से रूप दे दें तथा उसमें गेंरू भर दें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि गेंरू व चावल का आटा सूखा नहीं होना चाहिये। बल्कि थोड़ा सा गीला भी होना चाहिये। मनचाही आकृति बनाने तथा रंग भरने के लिये रूई के फाहे तथा ब्रुश का इस्तेमाल करें। यह अल्पना सूख जाने के बाद निखर जाएंगी और बड़ी ही सुन्दर नजर आयेगी। विशेष अवसरों पर उकेरे जानेवाले ये मांगलिक प्रतीक कल्याण की कामना के द्योतक हैं। प्रत्येक घर में इनके बनाने, उकेरने का दायित्व प्राय; महिलाओं पर रहता है। इसकी महत्ता के मान में मान्यता है कि बिना

इन अलंकरणों के घर कल्याणकारी, मंगलकारी नहीं प्रतीत होता। मांगलिक अवसरों पर घर में बनाएं जानेवाले चित्रांकन प्रायः कुँवारी कन्याओं अथवा स्त्रियों द्वारा किए जाते हैं, जिसमें अल्पना, रंगोली, मांडने अपने-अपने क्षेत्रों के अनुसार उकेरे जाते हैं। प्रारंभ में गाय के गोबर से उस स्थान को लीपा जाता है फिर सींक, सलाई, रुई, ब्रश अथवा उँगली के सहारे अल्पना, रंगोली, लोक चित्रकारी आदि बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया जाता है तथा अवसर के अनुरूप लक्ष्मी, कमल का फूल, स्वस्तिक, चिड़ियाँ, हाथी, शेर, मोर, फूल आदि बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ बनाए जाते हैं। यही नहीं वरन् गाँवों में तो जो लोकगीत इस अवसर पर गाए जाते हैं, उन्हें सुनकर श्रोता मुग्ध हो जाते हैं। इन चित्रांकनों एवं गीतों में लोकमंगल के इतने भाव भर दिए जाते हैं कि भारतीय संस्कृति मानो स्तोत्रवाहिनी के रूप में प्रवाहित होने लगती हैं।

इनमें जो विविध आकृतियाँ उकेरी जाती हैं उनके प्रति असीम भक्ति-भावना का भाव उड़ेला जाता हैं, जिसे विशेष नजरों से ही परखा जा सकता हैं अल्पना आलेखन में नारी-हृदय की कोमल भावनाओं का जो भाव उड़ेला जाता हैं, उसकी उत्कृष्टता को आँकना आसान नहीं हैं। शिव और शक्ति के समन्वय की कल्पना को अल्पना में आड़ी-तिरछी रेखाओं और अर्धवृतों में साकार करने की परंपरा भी है।

उत्तर भारत में ग्रामीण क्षेत्रो में, जहाँ पाश्चात्य प्रभाव नहीं पड़ पाया है, वहाँ चौक पूरने की प्रथा है; जो अल्पना, रंगोली आदि का ही रूप है। अनुष्ठान किए जाने वाले स्थान को पहले गाय के गोबर से लीपते हैं, उसके बाद सूप में गेहूँ, जौ, चावल (जो सुलभ हो) का आटा लेकर बड़ी आकर्षक आकृति का चौक पूरा जाता है; जिसमें उँगलियों के सहारे आड़ी-तिरछी रेखाओं से मांगलिक प्रतीक बनाए जाते हैं।

'रामचरितमानस' में इसका उल्लेख इस रूप में किया गया हैं-

चौकें चारु सुमित्राँ पूरी।
मनिमय बिबिध भाँति अति रूरी।।

तथा लोकगीत में भी कहा गया हैं-

घर बीच चउक पुराइला,
देव बइठाइला हो।

तात्पर्य यह है कि घर में चौक पूर कर मांगलिक कार्य के शुभारंभ में देव-स्थापना करके सर्वांगीण कल्याण की कामना की जाती है। वास्तव में ग्रामीण-जीवन का भोलाभाला, सरल-सीधा निष्कलुष स्वरूप इन सबसे झलकता है कि कितनी निश्छल, निर्मल भावनाएँ इन विविध उपास्य प्रतीकों में उभारी जाती है, उकेरी जाती हैं, उड़ेली जाती हैं; जिनका गुणगान करते-करते मन नहीं अघाता और देखते-देखते जी नहीं भरता। आज के फैलते दूषित वातावरण से ग्रामीण जीवन की ये निर्मल भावनाएँ झुलस न जाएँ, मलिन न हो जाएँ, अतः इस ओर अत्यधिक सतर्कता एवं सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

आज के इस बदलते परिवेश में रंगोली, सुपारी, सूखे मेवों आदि से भी चित्रित कर सजावट की जाती है। जो रंगोली तैयार करने में महंगी पड़ती है। धनाढ्य व्यक्तियों द्वारा ऐसी रंगोली तैयार की जा सकती है। गरीब व साधारण परिवार वाली गृहणियों द्वारा ऐसी रंगोली तैयार करना बस के बाहर है। रंगोली बनाते समय कहीं-कहीं हल्दी, आटे का प्रयोग भी किया जाता है।

रंगोली घर आंगन चौबारे की शान है। इसे सजाते ही मन रंग बिरंगा-सा हो जाता है। दीपावली के इन दिनों में दशहरा से छोटी दीपावली तक घर-घर की गृहणियां आकर्षक रंगोली, अल्पनाएं विभिन्न रंगों से बनाती है। घर के आगे रंगोली सजाने वाली गृहिणियों से लक्ष्मी प्रसन्न होती है और जो गृहणियां अपने सुन्दर मांडणों एवं रंगोली से लक्ष्मीजी को मंत्र मुग्ध कर देती हैं लक्ष्मी भी वहीं ठहर कर कुछ समय उस घर को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती है। इसलिए अपने आंगन में रंगोली का दीया सजाएं और लक्ष्मीजी को बुलाएं। देर ना करें।

♦♦♦

मंगली कुण्डली दोष निवारण पैकेट

'मंगली दोष' यह नाम सुनते ही हर व्यक्ति चिंतित हो उठता है या जिनकी संतान विवाह योग्य हो चुकी है वे अधिक चिंतित हो जाते है। लेकिन क्या वास्तव में मंगल दोष जीवन को, विवाह को प्रभावित करता है। तो इसका उत्तर है हाँ! जब तक मंगल के बुरे प्रभावों को समझने का प्रयास किया जाता है, तब तक वह बुराई की हद से भी गुजर चुका होता है। यही कारण है कि वर-कन्या की जन्मकुंडली मिलाते समय मंगल की स्थिति भी देखी जाती है, क्योंकि कुंडली के कुछ भवों में मंगल उपस्थित होने पर वह मंगलीक दोष का कारण बन जाता है। जिनकी कुण्डली मंगली है और वे विवाह का प्रयास कर रहे है तो उन्हें आवश्यकता से अधिक प्रयास करने पड़ते है, विवाह तय हो जाने पर भी सगाई टूट जाती है। विवाह के दिन ही कई बार दुर्घटनाएँ होती देखी गई है। विवाह के पश्चात् जब एक मंगली हो और दूसरा जातक मंगली ना होने पर परस्पर वैमन्स्यता देखी गई है। कटु संबंधों के कारण साथ रहना मुश्किल हो जाता है। कई ऐसी स्थितियाँ होती है लेकिन इसके साथ ही साथ दूसरे ग्रहों का संबंध, गोचर, दशा आदि भी जिम्मेदार बनती है। मंगली दोष होता ही नहीं यह कहना व्यर्थ ही होगा, जिसको पीड़ा होती है उसका दर्द दूसरा समझ पायेगा, कहना मुश्किल ही होता है। क्या इस मंगली दोष का कोई निवारण है, क्या इस समस्या से बचा जा सकता है, क्या मंगली दोष होने पर भी वर या कन्या का विवाह हो सकता है? यदि हां कहा जाये तो कोई मुश्किल बात नहीं क्योंकि जहाँ समस्या है वहाँ समाधान भी है और इसके लिये हम आपके लिए लाए हैं "मंगली दोष निवारण पैकेट" जो जीवन में इस दोष निवृति में सहायक बनेगा। रास्ता दिखाना हमारा दायित्व है, कर्म आपको करना है और फल भी आपको मिलेगा।

क्या मंगली कुण्डली के कारण- 1. विवाह में बाधा आ रही हैं? 2. विवाह होकर भी सुखमय जीवन नहीं हैं? 3. क्या आपके दाम्पत्य जीवन में कलह तो नहीं? 4. क्या आपके रिश्ते तलाक के कगार पर तो नहीं? 5. संबध हाँ होकर भी तय नहीं हो रहे है? 6. विवाह की उम्र लगभग पूर्ण होने पर भी विवाह सुख नहीं मिल पा रहा? 7. क्या आपकी जीवन साथी के साथ मधुरता नहीं है? 8. बात-बात पर क्रोधमय स्थिति हो जाती हैं? 9. क्या आप कष्टमय वैवाहिक जीवन से हताश है?

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1.मंगल पिरामिड 2.मंगल यंत्र 3.मंगल यंत्र लॉकेट 4.मंत्र जाप के लिये माला 5. मूंगा लॉकेट 6.पारद शिवलिंग 7.सम्पूर्ण विधि

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org